नयों का स्वरूप

Presentation Developed by : Smt Sarika Chabra

नय की परिभाषा

सामान्य-विशेषात्मक वस्तु के एक अंश को ग्रहण करने वाले ज्ञान को नय कहते हैं |

ज्ञाता के अभिप्राय को नय कहते हैं |

www.JainKosh.org

नयों की आवश्यकता

बिना नयों के जिनवाणी समझ में नहीं आती है ।

लोक व्यवहार भी नयों के आधार से ही चलता है ।

www.JainKosh.org

नयों के प्रकार

- निश्चय
- व्यवहार

www.JainKosh.org

व्यवहार नय

जो किसी पदार्थ को गुण भेद आदि से बताये अथवा

किसी अन्य पदार्थ के गुण किसी अन्य में बताये

उसे व्यवहार नय कहते हैं |

www.JainKosh.org

व्यवहार नय के प्रकार

- सद्भूत व्यवहार नय
  - उपचरित (अशुद्ध)
  - अनुपचरित (शुद्ध)
- असद्भूत व्यवहार नय
  - उपचरित
  - अनुपचरित

www.JainKosh.org

असद्भूत व्यवहार नय

जो वस्तु जैसी नहीं है, उसे प्रयोजनवश अन्यरूप जो बताता है,

उसे असद्भूत व्यवहार नय कहते हैं

जैसे घी का घड़ा, मेरा घर आदि

www.JainKosh.org

असद्भूत व्यवहार नय के प्रकार

उपचरित

जो बहुत दूर की वस्तु के साथ किसी अन्य वस्तु का सम्बन्ध बताये, वह उपचरित असद्भूत व्यवहार नय है |

जैसे : यह घर मेरा है, मेरी मम्मी का नाम शांतिबाई है

अनुपचरित

जो बहुत नजदीक की वस्तु के साथ किसी अन्य वस्तु का सम्बन्ध बताये, वह अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय है

जैसे : मैं गोरा हूँ, मेरी लम्बाई 5 फीट है, मेरे साथ 8 कर्म बंधे हैं

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

उपचरित

दूर (Formal) का है इसलिए <u>उपचरित</u>

असद्भूत

जैसा सम्बन्ध/ गुण है नहीं वैसा बताता है, इसलिए <u>असद्भूत</u>

व्यवहार

भिन्न द्रव्यों में सम्बन्ध जोड़ने के कारण <u>व्यवहार</u> है

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय

अनुपचरित

नजदीक का है (informal) इसलिए <u>अनुपचरित</u>

असद्भूत

जैसा सम्बन्ध/ गुण है नहीं वैसा बताता है, इसलिए <u>असद्भूत</u>

व्यवहार

भिन्न द्रव्यों में सम्बन्ध जोड़ने के कारण <u>व्यवहार</u> है

सद्भूत व्यवहार नय के प्रकार

अशुद्ध

अशुद्ध द्रव्य में गुण-गुणी या पर्याय-पर्यायी का भेद कथन करने वाला

जैसे : संसारी जीव में मतिज्ञान है, जीव का राग है, जीव मोह करता है

शुद्ध

शुद्ध द्रव्य में गुण-गुणी या पर्याय-पर्यायी का भेद कथन करने वाला

जैसे : जीव में केवलज्ञान है, जीव में ज्ञान-दर्शन गुण हैं, पुद्गल में स्पर्श-रस हैं

अशुद्ध सद्भूत व्यवहार नय

अशुद्ध

अशुद्ध / अपूर्ण दशाओं को बता रहा है इसलिए <u>अशुद्ध</u>

सद्भूत

एक पदार्थ में पायी जाने वाली अवस्थाओं को ही बताता है इसलिए <u>सद्भूत</u>

व्यवहार

एक वस्तु में भेद करके बताता है इसलिए <u>व्यवहार</u>

www.JainKosh.org

शुद्ध सद्भूत व्यवहार नय

शुद्ध

शुद्ध / पूर्ण दशाओं को बता रहा है इसलिए <u>शुद्ध</u>

सद्भूत

एक पदार्थ में पायी जाने वाली अवस्थाओं को ही बताता है इसलिए <u>सद्भूत</u>

व्यवहार

एक वस्तु में भेद करके बताता है इसलिए <u>व्यवहार</u>

निश्चय नय

गुण-गुणी या पर्याय-पर्यायी में अभेद ग्रहण करना निश्चय नय है |

स्वाश्रित वस्तु का ग्रहण करना निश्चय नय है |

www.JainKosh.org

इन वाक्यों में अंतर पहचानिए

- जीव में ज्ञान है
- जीव ज्ञानवाला है
- ज्ञान जीव का लक्षण है
- जीव ज्ञानात्मक है
- जीव ज्ञानमयी है
- ज्ञान ही जीव है
- जीव को ज्ञान है

www.JainKosh.org

निश्चय नय के भेद

शुद्ध निश्चय

शुद्ध पर्याय को अभेदरूप विषय करने वाला

जैसे जीव केवलज्ञानी है, जीव अनंत आनंदमयी है

परमभाव ग्राहक निश्चय नय

त्रैकालिक स्वभाव को विषय करने वाला

जैसे जीव त्रिकाल ज्ञायकस्वभावी है, जीव एक है, शुद्ध है

एकदेश शुद्ध निश्चय नय

क्षायोपशमिक भावों की एकदेश शुद्धता को कहने वाला

छद्मस्थ अवस्था में जीव शुद्ध भावों का कर्ता है

अशुद्ध निश्चय नय

अशुद्ध पर्याय को अभेदरूप विषय करने वाला

जैसे जीव रागी है, जीव अशुद्ध है

अशुद्ध निश्चय नय

अशुद्ध

अशुद्ध औदयिक भावों के साथ अभेद बताता है इसलिए अशुद्ध

निश्चय

गुण-गुणी में अभेद करके द्रव्य को विषय करता है इसलिए निश्चय

www.JainKosh.org

नय बताइए ?

- ज्ञान-स्वभावी जीव
- अरहंत भगवान् के अनंत चतुष्टय हैं
- जीव मिथ्यादृष्टि है
- मैंने खाना बनाया
- मैं खाना बनाने वाला नहीं हूँ, जीव हूँ
- जीव और शरीर भिन्न-भिन्न हैं
- अरहंत भगवान् केवलज्ञानी हैं
- इंद्रा की इन्द्राणी का नाम शचि होता है

www.JainKosh.org

नय बताइए ?

- 5वें स्वर्ग के देव ब्रह्मचारी होते हैं
- जीव में ज्ञान, दर्शन सुख है
- जीव में राग है
- मेरे पति का नाम महेश है
- मैं विधवा हूँ
- मैं गोरी हूँ
- मेरे कोई बच्चे नहीं हैं
- मैं धर्मात्मा हूँ

www.JainKosh.org

नय बताइए ?

- 10 प्राणों से जीव जीता है
- मैं बुद्धिमान हूँ
- अरहंत भगवान् की दिव्यध्वनि खिरती है
- शक्कर मीठी है
- पानी मैला है
- डॉक्टर ने मुझे बचाया
- चिति शक्ति के कारण जीव जीता है
- मुनिराज सकल चारित्री हैं

www.JainKosh.org

शुद्ध निश्चय नय

शुद्ध

शुद्ध क्षायिक भावों के साथ अभेद बताता है इसलिए शुद्ध

निश्चय

गुण-गुणी में अभेद करके द्रव्य को विषय करता है इसलिए निश्चय

www.JainKosh.org

परमभावग्राहक शुद्ध निश्चय नय

शुद्ध

त्रैकालिक शुद्ध पारिणामिक भाव के साथ अभेद बताता है इसलिए शुद्ध

निश्चय

अभेद करके द्रव्य को विषय करता है इसलिए निश्चय

www.JainKosh.org

विशेष

आगम में परमभाव ग्राहक निश्चय नय को एवं शुद्ध निश्चय नय दोनों को ही शुद्ध निश्चय कहा जाता है |

जहाँ पारिणामिक भाव से तन्मय द्रव्य को ग्रहण किया जाए, वहाँ परमभाव ग्राहक निश्चय नय समझना |

जहाँ क्षायिक भाव से तन्मय द्रव्य को ग्रहण किया जाए, वहाँ में शुद्ध निश्चय नय समझना |

www.JainKosh.org

एकदेश शुद्ध निश्चय नय

एकदेश शुद्धता से तन्मय द्रव्य सामान्य को पूर्ण शुद्ध कहना एकदेश शुद्ध निश्चय नय है |

जैसे जीव छद्मस्थ अवस्था में शुद्ध भावों का कर्ता है |

www.JainKosh.org

अशुद्ध निश्चय नय

अशुद्ध औदयिक भावों से तन्मय द्रव्य सामान्य को पूर्ण अशुद्ध देखना अशुद्ध निश्चय नय है |

जैसे रागादि को जीवस्वरूप कहना, क्रोधी जीव, संसारी जीव

www.JainKosh.org

- Reference : आलाप पद्धति
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
    - www.jainkosh.org
    - ☎: 94066-82889
- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं आलाप पद्धति की प्लेलिस्ट चुनें ।